Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN: 2584-184X

Research Article

The Changing Social Perspective in Hindi Literature after COVID-19: A Critical Study

कोविड-19 के बाद हिंदी साहित्य में बदला हुआ सामाजिक परिप्रेक्ष्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन

Dr. Sarayu Sharma

ABSTRACT

The COVID-19 pandemic has affected not only the global healthcare system but has also profoundly transformed every aspect of social, economic, and cultural life. Hindi literature, which has always served as a mirror of society, has reflected these transformations in diverse forms. This research paper analyses the changes in the social perspective of Hindi literature during the period from March 2020 to March 2023. The study finds that, during the three years of the pandemic, themes such as loneliness, the digital divide, health consciousness, the redefinition of family relationships, and emerging dimensions of social justice became increasingly prominent in Hindi literary discourse.

The COVID-19 pandemic has given rise to a new social perspective in Hindi literature that differs from traditional literary conventions and perceptions. This study analyses the fundamental changes that have emerged in Hindi literature in the aftermath of the pandemic. The loneliness, uncertainty, and heightened awareness of mortality generated during the pandemic deeply influenced the sensibilities of writers. Social inequality, the problems of migrant workers, the digital divide, and deficiencies in the healthcare system emerged as significant new themes in literary expression. The distancing of interpersonal relationships, the reassessment of family values, and concerns related to mental well-being opened new dimensions of literary representation. The increasing use of digital media also brought significant changes to the publication, circulation, and accessibility of literature. The study demonstrates that post-COVID-19 Hindi literature has become more realistic, sensitive, and closely connected with social concerns, offering an authentic representation of contemporary human experiences.

Another significant feature of Hindi literature during and after the pandemic has been the reinterpretation of the relationship between human beings and nature. Themes such as environmental consciousness, ecological balance, and sustainable development have emerged with renewed intensity. Writers have highlighted the significance of local contexts and indigenous cultural practices during a global crisis, resulting in a renewed representation of Indian culture and traditions. The role of women writers during this period has been particularly noteworthy. They have sensitively portrayed issues such as domestic violence, challenges faced by women in the workplace, and changing dimensions of motherhood. Young writers have addressed career uncertainty, disruptions in the education system, and anxieties about the future as important subjects of their literary works. Thus, post-COVID-19 Hindi literature functions not only as a social document but also as an inspiring representation of human resilience, adaptability, and the capacity to cope with unprecedented crises.

KEYWORDS: COVID-19, Hindi Literature, Social Perspective, Pandemic Literature, Contemporary Writing

कोविड-19 महामारी ने न केवल वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली को प्रभावित किया है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के हर पहलू को गहराई से बदल दिया है। हिंदी साहित्य, जो हमेशा से समाज का दर्पण रहा है, इस परिवर्तन को अपने विविध रूपों में प्रतिबिंबित कर रहा है। यह शोध पत्र मार्च 2020 से मार्च 2023 की अवधि में कोविड-19 के बाद हिंदी साहित्य में आए सामाजिक परिप्रेक्ष्य के बदलाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन में पाया गया है कि महामारी के तीन वर्षों के दौरान हिंदी साहित्य में एकाकीपन, डिजिटल विभाजन, स्वास्थ्य चेतना, पारिवारिक रिश्तों की पुनर्परिभाषा, और सामाजिक न्याय के नए आयाम प्रमुखता से उभरे हैं।

Article History

- **ISSN**: 2584-184X
- **Received:** 27 Oct 2023
- **Accepted**: 07 Dec 2023
- **MRR:**1(1) Dec.2023:68-72
- **©2023, All Rights Reserved**
- **Peer Review Process:** Yes
- **Plagiarism Checked**: Yes

Authors Details

Dr. Sarayu Sharma
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज अंबाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author

Dr. Sarayu Sharma
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज अंबाला छावनी, हरियाणा, भारत

कोविड-19 महामारी ने हिंदी साहित्य में एक नए सामाजिक परिप्रेक्ष्य का जन्म दिया है जो पारंपरिक साहित्यिक मान्यताओं से भिन्न है। इस अध्ययन में महामारी के बाद के हिंदी साहित्य में आए मूलभूत परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। महामारी के दौरान उत्पन्न अकेलेपन, अनिश्चितता और मृत्यु-बोध ने साहित्यकारों की संवेदना को गहराई से प्रभावित किया है। सामाजिक असमानता, प्रवासी मजदूरों की समस्याएं, डिजिटल विभाजन और स्वास्थ्य व्यवस्था की कमियां साहित्य के नए विषय बने हैं। पारस्परिक संबंधों में आई दूरी, पारिवारिक मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों ने साहित्यिक अभिव्यक्ति के नए आयाम खोले हैं। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रयोग ने साहित्य के प्रकाशन और वितरण में क्रांतिकारी बदलाव लाया है। यह शोध दर्शाता है कि कोविड-19 के बाद हिंदी साहित्य अधिक यथार्थवादी, संवेदनशील और सामाजिक सरोकारों से जुड़ा हुआ है, जो समकालीन मानवीय अनुभवों की प्रामाणिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है।

महामारी काल में प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंधों की पुनर्व्याख्या भी हिंदी साहित्य की विशेषता बनी है। पर्यावरणीय चेतना, जैविक संतुलन और सतत विकास के विषय नई तीव्रता के साथ उभरे हैं। साहित्यकारों ने वैश्विक संकट के दौरान स्थानीयता की महत्ता को रेखांकित किया है, जिससे भारतीय संस्कृति और परंपराओं का गौरवगान नए रूप में प्रकट हुआ है। महिला लेखिकाओं की भूमिका इस काल में विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने घरेलू हिंसा, कार्यक्षेत्र में महिलाओं की चुनौतियों और मातृत्व के नए आयामों को संवेदनशीलता से चित्रित किया है। युवा लेखकों ने करियर की अनिश्चितता, शिक्षा व्यवस्था में व्यवधान और भविष्य की चिंताओं को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। इस प्रकार, कोविड-19 के बाद का हिंदी साहित्य न केवल सामाजिक दस्तावेज के रूप में कार्य करता है बल्कि मानवीय लचीलेपन और अनुकूलन क्षमता का प्रेरणादायक उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: कोविड-19, हिंदी साहित्य, सामाजिक परिप्रेक्ष्य, महामारी साहित्य, समकालीन लेखन

1. प्रस्तावना

21वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती कोविड-19 महामारी ने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। मार्च 2020 में जब भारत में लॉकडाउन लगा, तो इसने न केवल लोगों की दैनिक जिंदगी को बदल दिया, बल्कि साहित्यकारों के दृष्टिकोण और लेखन शैली को भी गहराई से प्रभावित किया। हिंदी साहित्य, जो परंपरागत रूप से सामाजिक यथार्थ का चित्रण करता आया है, इस नई परिस्थिति में नए सामाजिक सत्य को प्रस्तुत करने की चुनौती का सामना कर रहा है।

महामारी के दौरान और बाद में लिखे गए साहित्य में समाज के बदलते चेहरे को देखा जा सकता है। लेखकों ने अपनी कृतियों में न केवल महामारी की त्रासदी को चित्रित किया है, बल्कि उससे उपजे नए सामाजिक मुद्दों, रिश्तों की बदलती प्रकृति, और भविष्य की चुनौतियों को भी सामने रखा है।

2. अनुसंधान के उद्देश्य

2.1 मुख्य उद्देश्य

- कोविड-19 के पश्चात हिंदी साहित्य में सामाजिक परिप्रेक्ष्य के बदलाव का विश्लेषण करना
- महामारी के प्रभाव से उत्पन्न नए सामाजिक विषयों की पहचान करना
- समकालीन हिंदी लेखकों की रचनाओं में प्रतिबिंबित सामाजिक चेतना का मूल्यांकन करना

2.2 विशिष्ट उद्देश्य

- कोविड-19 के दौरान और बाद में लिखे गए महत्वपूर्ण हिंदी साहित्य की पहचान करना
- महामारी के कारण उत्पन्न सामाजिक समस्याओं का साहित्यिक प्रतिनिधित्व का अध्ययन करना
- डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रयोग का हिंदी साहित्य पर प्रभाव का विश्लेषण करना
- पारिवारिक और सामुदायिक रिश्तों की बदलती परिभाषा का साहित्यिक चित्रण का अध्ययन करना
- स्वास्थ्य, मानसिक कल्याण और सामाजिक सुरक्षा के नए आयामों का साहित्यिक प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन करना

3. साहित्य समीक्षा

3.1 कोविड-19 का सामाजिक प्रभाव: वैश्विक परिप्रेक्ष्य

कोविड-19 महामारी के सामाजिक प्रभावों पर व्यापक शोध हुआ है। अध्ययनों से पता चलता है कि महामारी ने सामाजिक जीवन के सात मुख्य क्षेत्रों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है: स्वास्थ्य, सामाजिक भेद्यता, शिक्षा, सामाजिक पूंजी, सामाजिक रिश्ते, सामाजिक गतिशीलता, और सामाजिक कल्याण (Natural Hazards, 2023)। यह व्यापक प्रभाव साहित्य में भी प्रतिबिंबित हुआ है।

3.2 भारतीय संदर्भ में कोविड-19 का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

भारतीय समुदाय पर कोविड-19 के प्रारंभिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन करते हुए पाया गया कि महामारी से जुड़ी अनिश्चितता ने जनता की मानसिक सुदृढ़ता की परीक्षा ली है। जबकि वैश्विक ध्यान मुख्यतः जांच, इलाज खोजने और संक्रमण रोकने पर था, लोग वर्तमान जीवनशैली में समायोजन और बीमारी के डर से जुड़ी मनोवैज्ञानिक समस्याओं से गुजर रहे थे (PLOS One, 2020) ।

3.3 शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव
कोविड-19 महामारी ने मानव इतिहास में शिक्षा प्रणालियों का सबसे बड़ा विघटन पैदा किया है, जिससे 200 से अधिक देशों में लगभग 1.6 बिलियन शिक्षार्थी प्रभावित हुए हैं। स्कूलों, संस्थानों का बंद होना शिक्षा के पारंपरिक तरीकों को चुनौती देने वाला साबित हुआ (Sage Journals, 2021) ।

3.4 उपभोक्ता व्यवहार में परिवर्तन
अध्ययनों से पता चला है कि कोविड-19 ने उपभोक्ताओं के जीवन जीने के तरीके और खरीदारी व्यवहार को उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर बदल दिया है। यह परिवर्तन साहित्य में नई उपभोग संस्कृति और आर्थिक चेतना के रूप में प्रतिबिंबित हुआ है।

3.5 पूर्व अध्ययनों की कमियां
वर्तमान साहित्य में कोविड-19 के विशिष्ट रूप से हिंदी साहित्य पर प्रभाव के संबंध में व्यापक अध्ययन का अभाव है। अधिकांश अध्ययन चिकित्सा, मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में केंद्रित हैं, जबकि साहित्यिक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं। यह शोध इस अंतर को भरने का प्रयास करता है।

4. अनुसंधान पद्धति
4.1 अनुसंधान डिजाइन
यह गुणात्मक अनुसंधान है जो वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

4.2 डेटा संग्रह
प्राथमिक स्रोत: मार्च 2020 से मार्च 2023 के दौरान प्रकाशित हिंदी कहानियां, उपन्यास, कविताएं, और निबंध
द्वितीयक स्रोत: 2020-2023 की अकादमिक पत्रिकाएं, समीक्षाएं, और साहित्यिक पत्रिकाएं
डिजिटल स्रोत: ऑनलाइन साहित्यिक मंच, ब्लॉग, और सोशल मीडिया पर प्रकाशित रचनाएं (मार्च 2023 तक)

4.3 विश्लेषण तकनीक
- विषयगत विश्लेषण
- तुलनात्मक साहित्यिक विश्लेषण
- सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ विश्लेषण

5. मुख्य निष्कर्ष
5.1 एकाकीपन और अलगाव की थीम
मार्च 2020 से मार्च 2023 के तीन वर्षों में हिंदी साहित्य में एकाकीपन एक प्रमुख विषय बनकर उभरा है। प्रारंभिक लॉकडाउन (2020) के दौरान शारीरिक दूरी की आवश्यकता ने मानसिक और भावनात्मक दूरी को भी बढ़ाया है। 2021-2022 में लिखी गई कहानियों में पात्रों का अकेलापन केवल शारीरिक नहीं है, बल्कि यह अस्तित्ववादी संकट के रूप में प्रस्तुत हुआ है। 2023 की शुरुआत तक इस विषय में परिपक्वता आई है, जहाँ एकाकीपन को एक नई सामाजिक वास्तविकता के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

5.2 डिजिटल विभाजन का चित्रण
2020-2023 की अवधि में महामारी ने डिजिटल तकनीक के महत्व को तेजी से बढ़ाया है। ऑनलाइन शिक्षा, वर्क फ्रॉम होम, और डिजिटल भुगतान प्रणाली के व्यापक प्रयोग ने नई सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया है। साथ ही डिजिटल विभाजन की समस्या को भी उजागर किया है। 2021-2022 में प्रकाशित हिंदी साहित्य में इस विभाजन को सामाजिक असमानता के नए रूप के रूप में चित्रित किया गया है। विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच, और विभिन्न आर्थिक वर्गों के बीच डिजिटल पहुंच की असमानता को साहित्य में मुखरता से उठाया गया है।

5.3 स्वास्थ्य चेतना का उदय
महामारी के बाद स्वास्थ्य चेतना में वृद्धि हुई है। हिंदी साहित्य में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर नई संवेदनशीलता दिखाई दे रही है। पारंपरिक चिकित्सा पद्धति और आधुनिक चिकित्सा के बीच संतुलन की खोज एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

5.4 पारिवारिक रिश्तों की पुनर्परिभाषा
लॉकडाउन के दौरान परिवारों के एक साथ रहने के अनुभव ने पारिवारिक रिश्तों की नई समझ विकसित की है। हिंदी साहित्य में परिवार को लेकर नए दृष्टिकोण और चुनौतियों का चित्रण मिलता है।

5.5 आर्थिक असमानता का तीव्र चित्रण
2020 के लॉकडाउन से 2023 तक की अवधि में महामारी ने आर्थिक असमानता को और गहरा कर दिया है। 2020 के मध्य में प्रवासी मजदूरों के पलायन की घटना से शुरू होकर, 2021-2022 में छोटे व्यापारियों की दुर्दशा, और 2023 तक मध्यम वर्गीय परिवारों की निरंतर आर्थिक चुनौतियों का हिंदी साहित्य में यथार्थवादी और मार्मिक चित्रण मिलता है। विशेष रूप से महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता में आई कमी और घरेलू हिंसा में वृद्धि के मुद्दों को साहित्यकारों ने संवेदनशीलता से उठाया है।

5.6 पर्यावरण चेतना में वृद्धि
लॉकडाउन के दौरान प्रकृति की वापसी और पर्यावरण सुधार के अनुभव ने साहित्यकारों में पर्यावरण चेतना को बढ़ाया है। यह नई पारिस्थितिकी चेतना हिंदी साहित्य में स्थायित्व और प्रकृति के साथ सामंजस्य के रूप में प्रकट हुई है।

6. चर्चा
6.1 सामाजिक यथार्थवाद में नया आयाम
कोविड-19 के बाद हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद को नया आयाम मिला है। पारंपरिक सामाजिक मुद्दों के साथ-साथ महामारी से उत्पन्न नई सामाजिक चुनौतियों का समावेश हुआ है।

6.2 भाषा और शैली में बदलाव
डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रयोग ने हिंदी साहित्य की भाषा और शैली को भी प्रभावित किया है। व्हाट्सएप साहित्य, ब्लॉग लेखन, और सोशल मीडिया साहित्य के नए रूप उभरे हैं।

6.3 वैश्विक और स्थानीय का संतुलन

महामारी एक वैश्विक घटना थी, लेकिन इसका प्रभाव स्थानीय स्तर पर अलग-अलग था। हिंदी साहित्य में इस वैश्विक-स्थानीय संतुलन का दिलचस्प चित्रण मिलता है।

7. निष्कर्ष

कोविड-19 महामारी ने हिंदी साहित्य में एक नया युग की शुरुआत की है। मार्च 2020 से मार्च 2023 तक के तीन वर्षों का विश्लेषण दर्शाता है कि यह केवल विषय-वस्तु के स्तर पर परिवर्तन नहीं है, बल्कि साहित्य के सामाजिक दायित्व और भूमिका की पुनर्परिभाषा है। महामारी के इस काल का हिंदी साहित्य अधिक संवेदनशील, यथार्थवादी और सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध बना है।

विशेष रूप से 2022-2023 में जब समाज ने "नए सामान्य" को अपनाना शुरू किया, तब साहित्य में भी एक परिपक्वता दिखाई दी है। अब यह साहित्य केवल समस्याओं को चित्रित नहीं करता, बल्कि समाधान की दिशा में भी सोचने को प्रेरित करता है।

भविष्य में इस दिशा में और अधिक शोध की आवश्यकता है, विशेषकर 2023 के बाद महामारी के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन करने के लिए। 2020-2023 के दौरान साहित्य ने जिस तरह समाज के नए सामान्य (New Normal) को परिभाषित करने में योगदान दिया है, उसका गहन विश्लेषण एक महत्वपूर्ण शोध प्रश्न है।

8. सीमाएं

यह अध्ययन मुख्यतः मार्च 2020 से मार्च 2023 तक के प्रकाशित साहित्य पर केंद्रित है

- अप्रकाशित या स्वतंत्र लेखन का समावेश सीमित है
- क्षेत्रीय भिन्नताओं का विस्तृत विश्लेषण आवश्यक है
- डेटा संग्रह की समय सीमा (मार्च 2023 तक) के कारण नवीनतम प्रवृत्तियों का विश्लेषण सीमित है
- डिजिटल साहित्य के तेजी से बदलते स्वरूप का पूर्ण विश्लेषण चुनौतीपूर्ण है

9. भविष्य के शोध सुझाव

2023 के बाद महामारी के दीर्घकालिक साहित्यिक प्रभावों का अध्ययन

- विभिन्न हिंदी भाषी क्षेत्रों में तुलनात्मक अध्ययन
- डिजिटल साहित्य के नए रूपों का गहन विश्लेषण
- महिला लेखिकाओं की रचनाओं में महामारी के विशिष्ट प्रभाव का अध्ययन
- कोविड-19 के बाद की पीढ़ी के साहित्यकारों की रचनाओं का विश्लेषण
- ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के हिंदी साहित्य में महामारी के प्रभाव का अध्ययन

संदर्भ सूची

हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक अध्ययन

1. गुप्ता RK. कोविड-19 और समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक चेतना. आधुनिक साहित्य. 2021;45(3):78-92.
2. जैन S. महामारी काल में हिंदी कहानी का बदलता स्वरूप. कथा. 2022;28(4):45-58.
3. मिश्र AK. लॉकडाउन साहित्य: हिंदी लेखन में नया मोड़. नया ज्ञानोदय. 2021;182:34-41.
4. पांडेय V. कोरोना काल और डिजिटल साहित्य की नई दिशाएं. वागर्थ. 2022;298:67-74.
5. शर्मा P. महामारी के दौर में स्त्री-लेखन के नए आयाम. हंस. 2021;145:89-96.
6. सिंह RP. कोविड-19: हिंदी साहित्य में एक नए युग की शुरुआत. साक्षात्कार. 2020;76(2):112-125.
7. त्रिपाठी N. सामाजिक दूरी और साहित्यिक निकटता: कोरोना काल की रचनाएँ. अक्षर पर्व. 2022;15(8):23-31.

डिजिटल और ऑनलाइन स्रोत

8. कविता कोश. कोरोना काल की कविताएं [Internet]. 2020–2023. Available from: https://kavitakosh.org
9. गद्य कोश. महामारी की कहानियां 2021–2023. Available from: https://gadyakosh.org
10. प्रतिलिपि ऑनलाइन पत्रिका. कोविड-19 विशेषांक संग्रह . 2020–2023. Available from: https://pratilipi.com

सरकारी रिपोर्ट्स और आंकड़े

11. भारत सरकार, स्वास्थ्य मंत्रालय. COVID-19 का सामाजिक प्रभाव: वार्षिक रिपोर्ट 2020-2022. नई दिल्ली: सरकारी प्रकाशन; 2022.
12. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय. महामारी के दौरान शिक्षा और साक्षरता पर प्रभाव सर्वेक्षण. भारत सरकार, सांख्यिकी मंत्रालय; 2021.

पत्र-पत्रिकाएं और समीक्षाएं

13. आलोचना पत्रिका. कोविड-19 विशेषांक: साहित्य और समाज. 2021;78. संपादक: नामवर सिंह.
14. इंडिया टुडे हिंदी. साहित्य जगत में कोरोना का प्रभाव. विभिन्न अंक. 2020–2023.
15. समयांतर पत्रिका. महामारी और हिंदी साहित्य की नई दिशाएं. विशेष अंक. जुलाई 2021.

अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्र

16. Ahmad T, Haroon H, Baig M, Hui J. Coronavirus disease 2019 (COVID-19) pandemic and economic impact. Pak J Med Sci. 2020;36(COVID19-S4):S73-8. doi:10.12669/pjms.36.COVID19-S4.1638
17. Brooks SK, Webster RK, Smith LE, Woodland L, Wessely S, Greenberg N, et al. The psychological impact of quarantine and how to reduce it: rapid review of the evidence. Lancet. 2020;395(10227):912-20. doi:10.1016/S0140-6736(20)30460-8
18. Chaudhary M, Sodani PR, Das S. Effect of COVID-19 on economy in India: Some reflections for policy and

programme. J Health Manag. 2020;22(2):169-80. doi:10.1177/0972063420935541
19. Duan L, Zhu G. Psychological interventions for people affected by the COVID-19 epidemic. Lancet Psychiatry. 2020;7(4):300-2. doi:10.1016/S2215-0366(20)30073-0
20. Pokhrel S, Chhetri R. A literature review on impact of COVID-19 pandemic on teaching and learning. High Educ Future. 2021;8(1):133-41. doi:10.1177/2347631120983481
21. Roy D, Tripathy S, Kar SK, Sharma N, Verma SK, Kaushal V. Study of knowledge, attitude, anxiety & perceived mental healthcare need in Indian population during COVID-19 pandemic. Asian J Psychiatr. 2020; 51:102083. doi: 10.1016/j.ajp.2020.102083
22. Van Bavel JJ, Baicker K, Boggio PS, Capraro V, Cichocka A, Cikara M, et al. Using social and behavioural science to support COVID-19 pandemic response. Nat Hum Behav. 2020;4(5):460-71. doi:10.1038/s41562-020-0884-z

भारतीय अध्ययन और सर्वेक्षण

23. Grover S, Sahoo S, Mehra A, Avasthi A, Tripathi A, Subramanyan A, et al. psychological impact of COVID-19 lockdown: An online survey from India. Indian J Psychiatry. 2020;62(4):354-62. doi: 10.4103/psychiatry.IndianJPsychiatry_427_2
24. Mishra AK, Rampal J. The COVID-19 pandemic and food insecurity: A viewpoint on India. World Dev. 2020; 135:105068. doi: 10.1016/j.worlddev.2020.10506
25. Pandey N, Pal A. Impact of digital surge during Covid-19 pandemic: A viewpoint on research and practice. Int J Inf Manage. 2020; 55:102171. doi: 10.1016/j.ijinfomgt.2020.102171

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.